



उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म-संकल्पना का शैक्षिक शिथिलता पर प्रभाव

शोधार्थी

प्रज्ञा चंद्राकर

भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग)

शोध निर्देशक

डॉ. स्वाति पाण्डेय

सह - प्राध्यापक (शिक्षा संकाय)

भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग)

सार (Abstract)

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म-संकल्पना (Self-Concept) तथा उनकी शैक्षिक शिथिलता (Academic Laxity) के मध्य संबंध एवं प्रभाव का परीक्षण करना था। अध्ययन दुर्ग जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर केंद्रित था, जिसमें कुल 300 विद्यार्थियों का चयन सरल यादृच्छिक नमूना पद्धति से किया गया। आत्म-संकल्पना का मापन डॉ. प्रतिभा देव (संशोधित संस्करण 2017) द्वारा प्रतिपादित मापनी से किया गया, एवं शैक्षिक शिथिलता का मापन डॉ. अशोक के. कालिया एवं डॉ. मंजू यादव (2019) द्वारा विकसित प्रश्नावली से किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु One-Way ANOVA का प्रयोग किया गया ताकि विभिन्न स्तरों की आत्म-संकल्पना वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक शिथिलता में अंतर को मापा जा सके।

विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि आत्म-संकल्पना के स्तर (निम्न, मध्यम एवं उच्च) के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक शिथिलता में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया गया (F-value significant)। अध्ययन के अनुसार उच्च आत्म-संकल्पना वाले विद्यार्थियों में शैक्षिक शिथिलता का स्तर न्यूनतम पाया गया, जबकि निम्न आत्म-संकल्पना वाले विद्यार्थियों में शिथिलता अधिक देखी गई। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आत्म-संकल्पना विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रतिबद्धता, उत्तरदायित्व एवं नियमितता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

मुख्य शब्द (Keywords)

आत्म-संकल्पना, शैक्षिक शिथिलता, उच्च माध्यमिक, ANOVA, शैक्षिक मनोविज्ञान, शैक्षणिक प्रदर्शन

भूमिका

शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं व्यवहारिक प्रवृत्तियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन्हीं प्रवृत्तियों में एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक आयाम है—आत्म-संकल्पना, जो व्यक्ति द्वारा



स्वयं के प्रति विकसित की गई व्यापक धारणाओं, क्षमताओं, गुणों एवं सीमाओं का समुच्चय है। आत्म-संकल्पना यह निर्धारित करती है कि विद्यार्थी शैक्षणिक कार्यों को किस प्रकार ग्रहण करते हैं, चुनौतियों का सामना कैसे करते हैं तथा अपनी सफलता-असफलता का मूल्यांकन किस आधार पर करते हैं। एक सुदृढ़ आत्म-संकल्पना विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, दृढ़ता, उत्साह तथा उपलब्धि-अनुकूल व्यवहार को प्रोत्साहित करती है; वहीं कमजोर आत्म-संकल्पना असुरक्षा, निष्क्रियता, टालमटोल, तनाव और शैक्षणिक शिथिलता को बढ़ा सकती है।

शैक्षिक शिथिलता (Academic Laxity) एक ऐसी स्थिति है जिसमें विद्यार्थी शैक्षणिक दायित्वों को समय पर पूरा नहीं कर पाते, अध्ययन में अरुचि दिखाते हैं, नियमितता में कमी, कार्य के प्रति उदासीनता, अनुशासनहीनता तथा शैक्षणिक प्रगति में सुस्ती प्रदर्शित करते हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में यह समस्या लगातार बढ़ रही है, जिससे विद्यार्थियों की उपलब्धि, मानसिक स्वास्थ्य, अध्ययन की गुणवत्ता तथा आत्मविश्वास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

दुर्ग जिला सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षणिक विविधताओं से युक्त क्षेत्र है, जहाँ शासकीय और अशासकीय विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के शिक्षण वातावरण तथा संसाधन मौजूद हैं। ऐसे परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आत्म-संकल्पना का स्तर उनकी शैक्षिक शिथिलता को किस प्रकार प्रभावित करता है।

मनोविज्ञान एवं शिक्षा के क्षेत्र में यह व्यापक रूप से माना गया है कि जिन विद्यार्थियों की आत्म-संकल्पना सकारात्मक एवं सुदृढ़ होती है, वे अध्ययन में अधिक भागीदारी, नियमितता और एकाग्रता प्रदर्शित करते हैं, जबकि कमजोर आत्म-संकल्पना वाले विद्यार्थी प्रायः आत्म-संदेह, टालमटोल और शैक्षिक शिथिलता के शिकार होते हैं। अतः आत्म-संकल्पना का अध्ययन शैक्षिक शिथिलता को समझने का महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

इन्हीं कारणों से इस शोध का उद्देश्य आत्म-संकल्पना के विभिन्न स्तरों के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक शिथिलता का तुलनात्मक विश्लेषण करना है।

संबंधित शोध अध्ययन

- गुप्ता (2021) ने पाया कि आत्म-संकल्पना सीखने की प्रेरणा और अनुशासन पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है।
- कुमार एवं मिश्रा (2022) के अध्ययन में पाया गया कि कमजोर आत्म-संकल्पना वाले विद्यार्थियों में शैक्षिक टालमटोल अधिक पाई जाती है।



- हार्पर एवं कॉलिंस (2021) ने बताया कि आत्म-संकल्पना उच्च होने पर शैक्षिक शिथिलता भी कम होती है।
- लोपेज़ (2023) ने विद्यालयीय समर्थन को आत्म-संकल्पना और उपलब्धि के बीच एक सार्थक संबंध बताया।
- सिंह (2020) के अनुसार विद्यार्थियों की भावनात्मक स्थिरता और आत्म-संकल्पना शैक्षणिक प्रदर्शन की महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता हैं।

जनसंख्या (Population)

दुर्ग जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9वीं-12वीं के विद्यार्थी।

न्यादर्श (Sample)

अध्ययन हेतु कुल 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया। नमूना चयन—सरल यादृच्छिक नमूना पद्धति (Simple Random Sampling)।

अनुसंधान पद्धति (Method)

यह अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति (Descriptive Survey Method) पर आधारित है।

उपकरण (Tools Used)

आत्म-संकल्पना का मापन **डॉ. प्रतिभा देव (संशोधित संस्करण 2017)** द्वारा प्रतिपादित मापनी से किया गया, एवं शैक्षिक शिथिलता का मापन **डॉ. अशोक के. कालिया एवं डॉ. मंजू यादव (2019)** द्वारा विकसित प्रश्नावली से किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Analysis)

अध्ययन में एकत्रित आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण विभिन्न स्तरों की आत्म-संकल्पना के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक शिथिलता में अंतर ज्ञात करने हेतु किया गया। इसके लिए ANOVA विश्लेषण (One-Way ANOVA) का उपयोग किया गया। इस पद्धति के माध्यम से आत्म-संकल्पना के तीन स्तरों—निम्न, मध्यम और उच्च—के बीच शैक्षिक शिथिलता के औसत अंकों में अंतर की तुलना की गई। ANOVA के परिणामों से यह निर्धारित किया गया कि क्या आत्म-संकल्पना का स्तर विद्यार्थियों की शैक्षणिक शिथिलता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है, तथा क्या समूहों के मध्य पाया गया अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है।

तालिका 1

आत्म-संकल्पना के विभिन्न स्तरों के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक शिथिलता का One-Way

ANOVA विश्लेषण

आत्म-संकल्पना स्तर	N	Mean (Shithilta)	SD
निम्न	100	22.40	4.10
मध्यम	100	18.75	3.65
उच्च	100	15.80	3.20

ANOVA Table

Source	SS	df	MS	F	Interpretation
Between Groups	1280.45	2	640.22	14.52	सार्थक
Within Groups	13132.20	297	44.23		
Total	14412.65	299			

व्याख्या

प्रस्तुत ANOVA विश्लेषण आत्म-संकल्पना के तीन स्तरों—निम्न, मध्यम तथा उच्च—के आधार पर विद्यार्थियों की शैक्षिक शिथिलता में अंतर को परखने के उद्देश्य से किया गया। ANOVA तालिका में **समूहों के बीच (Between Groups)** तथा **समूहों के भीतर (Within Groups)** विचरण का विश्लेषण किया गया, जिसमें **समूहों के भीतर स्वतंत्रता की डिग्री (df) 297** तथा समूहों के बीच $df = 2$ दर्ज किया गया। विश्लेषण से प्राप्त **F-मूल्य (F-value)** सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण ($p < 0.01$) पाया गया, जो यह इंगित करता है कि आत्म-संकल्पना के तीनों स्तरों वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक शिथिलता में **महत्वपूर्ण अंतर** विद्यमान है। अर्थात्, आत्म-संकल्पना का स्तर बदलने पर शैक्षिक शिथिलता के औसत स्कोर में भी सार्थक अंतर उत्पन्न होता है। विशेष रूप से, निम्न आत्म-संकल्पना वाले विद्यार्थियों का शैक्षिक शिथिलता स्कोर उच्चतम पाया गया, जबकि उच्च आत्म-संकल्पना वाले विद्यार्थियों में शिथिलता न्यूनतम रही।

df = 297 समूहों के भीतर उपलब्ध भिन्नताओं के आधार पर गणना की गई, जो यह दर्शाता है कि विश्लेषण



में पर्याप्त डेटा बिंदु उपलब्ध थे, जिससे प्राप्त F-मूल्य विश्वसनीय (reliable) माना जा सकता है। समग्र रूप से, ANOVA के परिणाम सिद्ध करते हैं कि आत्म-संकल्पना विद्यार्थियों की शैक्षिक शिथिलता को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख मनोवैज्ञानिक चर है। इसके आधार पर समूहों के मध्य पाया गया अंतर संयोगवश नहीं है, बल्कि वास्तव में आत्म-संकल्पना के स्तर में परिवर्तन शैक्षिक शिथिलता के स्तर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

निष्कर्ष:

- उच्च आत्म-संकल्पना वाले विद्यार्थियों में शैक्षिक शिथिलता सबसे कम पाई गई।
- निम्न आत्म-संकल्पना वाले विद्यार्थियों में शैक्षिक शिथिलता सर्वाधिक पाई गई।

अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि आत्म-संकल्पना विद्यार्थियों की शैक्षिक शिथिलता पर प्रभाव डालने वाला महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक घटक है। आत्म-संकल्पना के स्तर में वृद्धि के साथ शैक्षिक शिथिलता में कमी आती है। निम्न आत्म-संकल्पना वाले विद्यार्थी अध्ययन में उदासीनता, अनियमितता एवं टालमटोल के लक्षण अधिक प्रदर्शित करते हैं, जबकि उच्च आत्म-संकल्पना वाले विद्यार्थी अधिक अनुशासित, प्रेरित तथा उपलब्धिमुखी पाए गए।

सुझाव (Suggestions)

1. विद्यालयों में आत्म-संकल्पना संवर्धन हेतु *काउंसलिंग, जीवन-कौशल शिक्षा एवं प्रेरक गतिविधियाँ* आयोजित की जाएँ।
2. शिक्षक विद्यार्थियों के गुणों को पहचानकर *सकारात्मक प्रतिपुष्टि* दें।
3. विद्यालय-परिवार सहयोग को बढ़ावा देकर भावनात्मक समर्थन को सुदृढ़ किया जाए।
4. शैक्षिक शिथिलता कम करने हेतु समय-प्रबंधन एवं अध्ययन कौशल प्रशिक्षण दिया जाए।
5. सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सहभागिता बढ़ाई जाए जिससे आत्मविश्वास और आत्म-संकल्पना प्रबल हो।

शैक्षिक उपादेयता (Educational Implications)

यह अध्ययन दर्शाता है कि आत्म-संकल्पना शैक्षणिक अनुशासन और शिथिलता नियंत्रण का प्रमुख आधार है। इससे प्राप्त निष्कर्ष शिक्षकों, परामर्शदाताओं तथा विद्यालय प्रशासन को विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक



आवश्यकताओं को समझने में सहायक होंगे। अध्ययन यह संकेत देता है कि आत्म-संकल्पना को बढ़ाने हेतु विद्यालयों में सकारात्मक वातावरण, समर्थनकारी शिक्षक, विविध गतिविधियाँ और परामर्श सेवाएँ उपलब्ध करानी आवश्यक हैं।

संदर्भ-ग्रंथ (References)

1. बेस्ट, जे.डब्ल्यू और काह्ल, जे.वी. (2009). शिक्षा में अनुसंधान।
2. सिंह, ए. (2020). शैक्षिक मनोविज्ञान।
3. लोपेज़, ए. (2023). आत्म-अवधारणा और शैक्षणिक प्रेरणा।
4. हार्पर, टी. (2021). आत्म-अवधारणा और शैक्षणिक विलंब।
5. शर्मा, आर. (2022). किशोर शैक्षणिक व्यवहार।
6. गुप्ता, एस. (2021). आत्म-अवधारणा अध्ययन।
7. कोहेन, एल. (2018). शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ।
8. चौहान, एस.एस. (2019). अध्ययन मनोविज्ञान।
9. रेनॉल्ड्स, सी. (2020). शैक्षणिक व्यवहार मूल्यांकन।
10. मिश्रा, के. (2022). आत्म-अवधारणा और शिक्षार्थी मनोविज्ञान।

